

घरेलू कामगार महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति

Rashmi Khobragade, Research Scholar, Department of Sociology, Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth University,
Udaipur, Rajasthan

सारांश

घरेलू कामगार महिलाएँ शहरी तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद सामाजिक और आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत कमजोर स्थिति में जीवनयापन करती हैं। घरेलू काम के अंतर्गत खाना बनाना, सफाई, कपड़े धोना, बच्चों एवं बुजुर्गों की देखभाल तथा अन्य घरेलू सेवाएँ शामिल हैं। इस क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं का बड़ा हिस्सा अनौपचारिक रोजगार से जुड़ा होता है, जिसके कारण उन्हें नियमित वेतन, रोजगार सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा तथा कार्यस्थल पर सम्मान जैसी सुविधाएँ सीमित रूप में प्राप्त होती हैं। निम्न एवं अनिश्चित आय, लंबे कार्य घंटे, रोजगार की अस्थिरता और कार्यस्थल पर भेदभाव उनकी आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते हैं। सामाजिक स्तर पर भी इन महिलाओं को वर्ग, लिंग और पेशे से जुड़े पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता है। कई महिलाओं के लिए घरेलू कार्य परिवार की आय में महत्वपूर्ण योगदान देता है तथा उन्हें आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में अवसर प्रदान करता है, किंतु उनकी आय और निर्णय लेने की क्षमता अनेक सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है। शिक्षा, कौशल-विकास, कानूनी जागरूकता और सामाजिक सुरक्षा तक पहुँच उनकी स्थिति में सुधार के महत्वपूर्ण माध्यम हो सकते हैं। अतः घरेलू कामगार महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन लैंगिक समानता, श्रम अधिकार और समावेशी विकास के व्यापक संदर्भ में महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन उनके सामने उपस्थित चुनौतियों तथा सशक्तीकरण की संभावनाओं को समझने का प्रयास करता है।

मुख्यशब्द: घरेलू कामगार महिलाएँ, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, अनौपचारिक क्षेत्र, महिला श्रम, श्रम अधिकार, सामाजिक सुरक्षा, महिला सशक्तीकरण, आर्थिक आत्मनिर्भरता, लैंगिक समानता।

